हिमाचली लोक साहित्य में मुक्तक गीत

- ‡ãŠÓ¥ã Þã¶³ ½ãÖãªãÌã¾ãã

लोक साहित्य का समाज की उन्नति के लिए आज भी बहुत महत्व है। आज जबकि विभिन्न बाधाएं लोक साहित्य के मार्ग में खड़ी हैं तब भी यह साहित्य लोगों में अमिट छाप बनाने में सक्षम है। यह सत्य है कि लोक साहित्य साफ सुथरी नदी की भांति सभी की आंतरिक प्यास को निरन्तर बुझाता चला आ रहा है। लोक साहित्य की अन्य विधाओं की भांति लोक गीतों में मुक्तक गीतों का विशेष महत्व और पहचान है। लोकगीतकारों ने लम्बे गीतों के साथ छोटे-छोटे दो-तीन या चार पंक्तियों के गीत लोगों के समक्ष प्रस्तुत किए हैं जो आज भी चुपचाप अनथक चलते हुए विशाल जन समूह में गाए जा रहे हैं।

लोक मुक्तक गीतों में मानव मन के सहज सरल एवं साफ सुथरे भाव स्वत: प्रकट हैं। जिस प्रकार गांवों का सौन्दर्य (प्राकृतिक) अकृत्रिम होता है उसी तरह लोक मुक्तक भी हैं। प्रेम-प्यार, हंसी-खुशी, इच्छा-कामना, दु:ख-गम, संयोग-वियोग, करुणा-क्रोध, सुख-व्यथा, हास-परिहास आदि भावों का सुन्दर और मर्यादित रस लोक मुक्तक गीतों में सहज द्रष्टव्य है। भाव, रस-गुण क्रिया, प्रतीक, उपमान-उपमेय, तुकबंदी या शब्दों का अत्यन्त सुन्दर प्रयोग हुआ है। और तो और छन्दों के साथ बिम्ब भी सहज-स्वाभाविक रूप से मिल जाते हैं। किन्तु यह भी सत्य है कि इन गीतों या लोक गीतों का किन्हीं नियमों में बांधा हुआ नहीं होना। ये तो मानव मन की सहज, सरल और स्वाभाविक अभिव्यक्ति हैं। छन्द, उपमान बिम्ब प्रतीक आदि भी स्वाभाविक ही शामिल हो गये हैं।

लोक मुक्तक गीत खुले-खुले वातावरण और एकांत में गाये जाने वाले गीत हैं। ऊंची लए में गाये जाने वाले ये गीत ऊंची धार, घासणी-फाट, नदी-नाला तट, घाटी-वन या आबादी से दूर, खेतों-खलिहानों, सुनसान स्थानों पर गाए जाते हैं। घर, भीड़-भड़क्के, या तंग स्थानों पर गाने से इनमें रस, आनन्द नहीं मिलता ना ही अच्छे लगते हैं। पहाड़ी घाटी पर पशु चराते या खेतों में, वन में, घास-लकड़ी काटते जब लोक मुक्तक गीत गाए जाते हैं तो सुनने वाले दिल थाम कर खड़े होकर सुनने लगते हैं। खुले वातावरण में गीतों का माधुर्य भी चौगुना बढ़ जाता है। लोक मुक्तक गीत अकेले या महिला-पुरुष आमने-सामने बारी-बारी गाते हैं। सवाल-जवाब के रूप में भी इन्हें गाते हैं। गाने वाले के मुख से समस्त लोगों की भावनाओं का प्रस्फुटन सभी को अच्छा लगता है। समूह रूप में गाने से इन गीतों को सुनने में आनन्द नहीं मिलता बल्कि इनके प्राकृतिक रूप को भी झटका लगता है। बहुतों द्वारा गाए जाने पर सुनने-सुनाने में सहजता और स्वाभाविकता के स्थान पर कृत्रिमता ही सामने आएगी।

लोक मुक्तक गीतों में शब्द रचना, भाव, आवाज, लय-लोच और गीतों की भीतरी सुन्दरता का ही अधिक महत्व है। वाद्य यंत्रों की इनमें आवश्यकता ही नहीं रहती। इन्हें गाती बार कोई नृत्य-नाच नाटी या गिद्धा भी नहीं होता। यह अवश्य हो जाता है कि गाती बार चेहरे के हाव-भाव, हाथ-कमर गीतों के भाव बोलों के साथ बदल सकते हैं। गीतों की पंक्तियों में छुपे भाव-बोध, सवाल-जवाब, रोमानियत, हास्य-व्यंग्य, पीड़ा-चुभन इन गीतों को स्वत: ही गरिमामय बनाते हैं जिन्हें सभी आयु के व्यक्ति हाथों हाथ लेते हैं। रोमांस, श्लीलता-अश्लीलता, चुभन का आधिक्य रहने पर भी लोक मुक्तक गीत खूब पसन्द किये जाते हैं। खुला गायन, खुला वातावरण, खुला मन जन मानस को मर्यादित आजादी में खूब खुला-खुला रखता है।

हिमाचली लोक मुक्तक गीतों में बालो-गंगी, झरी-लामण, बामणू-नणी, दोहे-लाहणी, टप्पे-भाभी जैसे गीत शामिल हैं। हिमाचल के जिला मण्डी की चौहार घाटी के लोक मुक्तक गीत भी इसके अपवाद नहीं हैं। चौहार घाटी के लोक मुक्तक गीत बामणुओं की कुछ बानगी प्रस्तुत है :-

पारली धारा री मामीएं ।
अवारली धारा री बूबे ।
गोरे-गोरे थे तिरे गालडू ।
दांद लोड़े थे दोहरे खूबे ।

पार धार पर रहने वाली मामी, इस और की धार पर रहने वाली बुआ। तुम्हारे गाल बहुत सुन्दर हैं जिनमें दंत पंक्तियां दोहरी चुभ जाएं। यानी तुम इतनी सुन्दर हो कि तुमसे प्यार करने को मन चाहता है।

आधा बोलूं बामणू ।
आधा बोलूं छिंजोटी ।
राती नीं आवुंदी निंदर ।
ध्याड़ी नी मिलदी रोटी ।

आधा गीत बामणू गाऊं । आधा गीत छिंजोटी गाऊं ।। तुम्हारी याद में रात को नींद नहीं आती ।दिन को भूख नहीं लगती। अर्थात तुम्हारे प्यार में कहीं भी मन नहीं लगता है।

ध्याड़ा औडुआ नहठा ।
बाना-मौहरु पीछे ।।
हांडा बाझीया ठिकरू ।
माहणू नी मरेया किछे ।।

दिन उड़ता हुआ बान और मौहरू के पेड़ों के पीछे छिप गया। हांडी टूट गई तो ठिक्कर बच जाता है। मगर आदमी मर जाए तो कुछ भी शेष नहीं रहता है।

तेरा बोलध माल़टू शाल़टू ।
मेरा बोल़ध माल़ी ।
शाढ़ा महीने झरी निंडदी-गुंडदी ।।
हाऊं लोड़ी सोगी दंदाल़ी ।।

तुम्हारा बैल चितकबरा है । मेरा बैल स्वस्थ-सुन्दर है । आषाढ़ के महीने तुम निंदाई बु गुड़ाई करना ।मैं साथ में दंदाल देने वाला बनूं । अर्थात तुम शोभली हो तो मैं स्वस्थ हूं। हम दोनों साथ-साथ ही रहें।

एकी पुघा धान माहुरी ।
दूजे पुंघा कुन्दी ।
मैं आवुणा जोड़ी घाहगे ।
तूं आया कपड़े धोंदी ।।

एक खेत के कोने में धान माहुरी । दूसरे खेत के कोन में धान कुन्दी । मैं बान का घास लेकर आऊंगा ।। तुम कपड़े धोने आना अर्थात हम दोनों सुवासित धानों की तरह हैं दोनों मिलेंगी ही ।

उथड़ी धारा नी बोलणा ।
जोड़ा ब्राघणू जोघे ।
मुंहडू छयोरा अयोरे ।
हिकडू भरीरा क्रोधे ।।

ऊंची धार की तरह तुम सुन्दर तन वाली । स्वस्थ जोड़ा छाती वाली । तुम्हरे चेहरे में कालिमा आ गई है और दिल रोष से भरा हुआ है।

सिर पाहरू कांघीए ।
कांघी पाहरी रूपे ।
जांघडू शल़े बाल्हा रे हांडणे ।
मुंह जल़ू सकेता रे धूपे ।।

बाल कंघी ने संवार लिए। कंघी को चांदी ने संवारा है। बल्हघाटी में चलने से टांगे थके गई हैं। सुकेत (सुन्दर नगर) की धूप से चेहरा जल गया है। अर्थात तुम्हारे लिए दूर-दूर जा जाकर अपना हाल बेहाल कर लिया है।

चौहार घाटी के ये कुछ लोक मुक्तक गीत जनमानस का अनुरंजन करने में सक्षम हैं। इनमें किसी समाज की स्थिति, स्थानों की जानकारी, सभ्यता-संस्कृति, प्रेम-भातृत्व, आर्थिक-धार्मिक, स्थिति तथा नैतिक मूल्यों की भी जानकारी प्राप्त हो जाती है। किसी समाज की उन्नति, इतिहास के दिग्दर्शन भी करा देते हैं। सही मायने में लोक मुक्तक गीत बहुत कीमती हैं। सभी को इनकी सम्भाल और संग्रहण-रक्षण प्राथमिक आधार पर करना अनिवार्य है।

विकास कार्यालय पधर जिला मण्डी (हि.प्र.) -176121